शंकर वेदान्त में सृष्टि (विश्व) विचार

Shankara's Theory of World

उपनिषदों की भाँति शंकर भी एक ही परमसत्ता में विश्वास रखते हैं। उनके अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र वास्तविक सत्ता है। इसलिए वे विश्व को असत् या अवास्तविक मानते हैं। शंकर ने कहा है कि जगत् ईश्वर की सृष्टि है। सृष्टि एवं प्रलय चक्र निरन्तर चलता रहता है। सृष्टि का अर्थ है - किसी चीज का अविर्भाव (उद्भव) होना तथा प्रलय का अर्थ है - उस वस्तु विशेष का तिरोभाव होना। ईश्वर इस जगत् की सृष्टि माया से करता है तथा माया यहाँ ईश्वर की शक्ति को बताया गया है। अत: इस जगत् का आविर्भाव ईश्वर द्वारा होता है एवं पुन: प्रलयकाल में यह जगत् उसी ईश्वर में विलीन हो जाता है। इसप्रकार से यहाँ पर ईश्वर ही इस जगत (विश्व) का स्रष्टा, पालनकर्ता एवं संहारकर्ता है। जीवों को उनके आवश्यकता के अनुसार जीवन जीने के लिए ईश्वर इस जगत् में नानाविध वस्तुओं का निर्माण करता है। शंकर के अनुसार सृष्टि या विश्व पारमार्थिक दृष्टि से सत्य नहीं है, सृष्टि केवल व्यावहारिक दृष्टि से ही सत्य है।

शंकर तीन प्रकार की सत्ता को मानते हैं → (i) प्रातिभासिक सत्ता, (ii) व्यावहारिक सत्ता, (iii) पारमार्थिक सत्ता।

(i) प्रातिभासिक सत्ता (Apparent reality) :→ ऐसी सत्ता जिसका हमें केवल आभास हो। यह क्षणिक सत्ता है। इसका खण्डन जागरित अनुभव द्वारा हो जाता है। जैसे - स्वप्न के पदार्थों की सत्ता अथवा भ्रम के पदार्थों की सत्ता।

(ii) व्यावहारिक सत्ता (Practical existence) :→ यह सत्ता इस जगत् के पदार्थों की सत्ता है, जैसे- कुर्सी, घर आदि की सत्ता। इनका अनुभव सबको होता है। यह हमारे व्यवहार में

काम आती है।

(iii)- पारमार्थिक सत्ता (Supreme existence):→ इस सत्ता का तीनों कालों में बाध नहीं होता अर्थात् जो अनश्वर, नित्य सत्ता है और वह है एकमात्र परमब्रह्म की सत्ता; जिसे शंकर निर्गुण ब्रह्म कहते हैं। इसका किसी प्रकार से खण्डन संभव नहीं है। यह विशुद्ध सत्ता है।

उपर्युक्त तीनों प्रकार की सत्ताओं में शंकर ने विश्व को व्यावहारिक सत्ता के अन्तर्गत रखा है। विश्व न तो स्वप्न या भ्रम की भाँति असत्य है और न ही ब्रह्म की भाँति सत्य। इसकी स्थिति इन दोनों के मध्य की है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से विश्व की सत्यता में विश्वास आवश्यक है। इससे दैनिक जीवन में सहायता मिलती है।

अब यहाँ पर प्रश्न होता है कि - यदि विश्व असत् है, तो सत्य या वास्तविक क्यों दिख पड़ता है? शंकर इसका उत्तर स्वप्न की उपमा के आधार पर देते हुए कहते हैं कि - स्वप्न की घटनाएँ अवास्तविक हैं; किंतु ये तब तक सत् दीख पड़ती हैं, जब तक व्यक्ति निद्रा में स्वप्न देखता है। ज्योंहि नींद टूटती है, त्योंहि ये घटनाएँ असत् सिद्ध हो जाती हैं। इसी प्रकार शंकर कहते हैं कि जब तक व्यक्ति अज्ञान के वशीभूत रहता है, तब तक वह विश्व की वास्तविकता में विश्वास रखता है, किंतु अज्ञान से मुक्त होते ही उसे मूल सत्ता का ज्ञान होता है और वह विश्व की वास्तविकता से भी परिचित हो जाता है। अतः ज्ञानी के लिए यह विश्व मिथ्या है और एकमात्र ब्रह्म ही वास्तविक है। (ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या)

इसी प्रकार से शंकर विश्व की अवास्तविकता को सिद्ध करने के लिए भ्रम का उदाहरण रस्सी और सर्प तथा जादूगर के खेल के रूप में दिया है। साथ ही विश्व की अवास्तविकता को सिद्ध करने के लिए कुछ तर्क भी प्रस्तुत किया है। वे हैं -

(1). सदैव विद्यमान रहने वाली वस्तु सत्य होती है। विश्व की उत्पत्ति और इसका विनाश संभव होने के कारण इसे सदैव विद्यमान नहीं कहा जा सकता। इसलिए इसे सत्य भी नहीं कहा जा सकता।

(2). अपरिवर्तनशील वस्तु सत्य होती है और परिवर्तनशील वस्तु असत्य मानी जाती है। विश्व सतत परिवर्तनशील होने के कारण असत्य है।

(3). देश-काल एवं कारणता की सीमा के अंतर्गत आने वाली वस्तुएँ असत्य होती हैं और इनसे परे वस्तुएँ सत्य होती हैं।

(4). दृश्य वस्तुएँ असत्य होती हैं। विश्व भी दृश्य है; क्योंकि यह दृष्टिगोचर होता है, इसलिए यह असत्य है।

(5). विवर्त या आभास असत्य माना जाता है। विश्व ब्रह्म का आभास या विवर्त होने के कारण असत्य है।

चूंकि शंकर ने इस विश्व की सृष्टि की उत्पत्ति को माया के द्वारा बतलाया है, जो कि ईश्वर की शक्ति है। ईश्वर द्वारा ही इस जगत का संचालन, सृष्टि एवं विनाश होता है। सृष्टि ईश्वर की लीला है। सृष्टि करना ईश्वर का स्वभाव है, इसके पीछे ईश्वर का अपना कोई निजी प्रयोजन नहीं होता है।

शंकर ने ईश्वर द्वारा इस विश्व प्रक्रिया को 'पंचीकरण' द्वारा व्यक्त किया है। जिसमें सर्वप्रथम ईश्वर से पाँच सूक्ष्म भूतों की उत्पत्ति होती है। माया से आकाश की, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल की उत्पत्ति होती है। आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी से सूक्ष्म भूतों का निर्माण होता है। पाँच स्थूल भूतों का निर्माण पाँच सूक्ष्म भूतों के पांच प्रकार के संयोग के परिणामस्वरूप होता है। जिस सूक्ष्म भूत को स्थूल भूत में बदलना होता है उसका आधा भाग ($\frac{1}{2}$) तथा अन्य चार सूक्ष्म तत्वों के आठवें भाग ($\frac{1}{8}$) के संयोजन के परिणाम स्वरूप पाँच स्थूल भूतों का निर्माण होता है। यह क्रम इस प्रकार से है –

स्थूल आकाश = $\frac{1}{2}$ आकाश + $\frac{1}{8}$ वायु + $\frac{1}{8}$ अग्नि + $\frac{1}{8}$ जल + $\frac{1}{8}$ पृथ्वी

स्थूल वायु = $\frac{1}{2}$ वायु + $\frac{1}{8}$ आकाश + $\frac{1}{8}$ अग्नि + $\frac{1}{8}$ जल + $\frac{1}{8}$ पृथ्वी

स्थूल अग्नि = $\frac{1}{2}$ अग्नि + $\frac{1}{8}$ आकाश + $\frac{1}{8}$ वायु + $\frac{1}{8}$ जल + $\frac{1}{8}$ पृथ्वी

स्थूल जल = $\frac{1}{2}$ जल + $\frac{1}{8}$ आकाश + $\frac{1}{8}$ वायु + $\frac{1}{8}$ अग्नि + $\frac{1}{8}$ पृथ्वी

स्थूल पृथ्वी = $\frac{1}{2}$ पृथ्वी + $\frac{1}{8}$ आकाश + $\frac{1}{8}$ वायु + $\frac{1}{8}$ अग्नि + $\frac{1}{8}$ जल

इस प्रकार उपर्युक्त पंचीकरण की प्रक्रिया द्वारा ही ईश्वर इस विश्व का निर्माण करता है। प्रलय सृष्टि का विपरित एवं प्रतिकूल प्रक्रिया है। प्रलय की अवस्था में पृथ्वी का जल में, जल का अग्नि में, अग्नि का वायु में, वायु का आकाश में तथा आकाश का ईश्वर की माया में विलय हो जाता है। मनुष्य का सूक्ष्म शरीर इन्हीं पाँच भूतों से बना है तथा स्थूल शरीर स्थूल भूतों से निर्मित है। शंकर ने विश्व के इसी क्रम को स्वीकार किया है। लेकिन उनके मत में विश्व रूपी समस्त प्रक्रिया ब्रह्म का विवर्त मात्र है। परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह सत्य प्रतीत मालूम पड़ता है। क्योंकि एकमात्र सत्य केवल ब्रह्म है।

———— x ————